Journal of Social Review and Development, 2026; 5(Special Issue 3):33-37 ISSN NO: 2583-2816

Social Science

मध्य हिमालय की परम्परागत भूकम्परोधी भवन स्थापत्य विरासत का अध्ययन (यमुना–टौंस नदी घाटी के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 सुशील कुमार कगडियाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, रा0 स्नात0 महाविद्यालय नरेन्द्र नगर टिहरी, गढवाल, उत्तराखंड, भारत
Correspondence Author: डॉ0 सुशील कुमार कगडियाल
Received 1 Apr 2026; Accepted 12 May 2026; Published 29 May 2026
DOI: https://doi.org/10.64171/JSRD.5.S3.33-37

सारांश
ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक परम्पराओं से अभिभूत गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश नदी घाटी क्षेत्र की धर्म, इतिहास, संस्कृति व साहित्य एवं स्थापत्य कला के क्षेत्र में अपनी एक पृथक पहचान रही है। देवात्मा स्वरूप हिमालय की चोटियॅा तथा जीवन दायिनी पवित्र नदीयॅा गंगा, यमुना के स्रोतो के प्रति भारतीय जनों में सदियो से ही श्रद्धा आकर्षण एवं जिज्ञासा रही है, फलतः अनेक ऋषि मुनियों, तपस्वियों एवं साहित्यिक साधकों व वाह्य जातियों के लिए यह विषम भौगोलिक पारिस्थिकीय क्षेत्र आश्रय बना रहा, वाहय जातियॅा इस भू–भाग से प्रभावित हुई परिणामतः द्वितीय सहस्त्राब्दी ई0 पूर्व के मध्य में अनेक वाहय जातियो का आगमन इन घाटी क्षेत्रो में होना प्राराम्भ हुआ तथा अधिकांश ने इसी भू–भाग को अपना आधिवास बनाया।

मूलशब्दः सुमेर, चौखट, पुरा भूकम्परोधी तकनीक, धाड़ा, परम्परागत, स्थापत्य

परिचय

हिमालय का यह नदी घाटीयों का क्षेत्र अपनी प्राकृतिक और आध्यात्मिक धरोहर के साथ ही परम्परागत स्थापत्य के लिए प्राचीन समय से प्रसिद्ध रहा है, यहॉ लौकिक वास्तु के रूप में सामान्य काष्ठ भवनो व बहुमंजिले काष्ठ भवनो की अत्यधिकता हैं। हिमालय के पर्वतीय भू–आकृतिक प्रदेश का एक विशेष लक्षण यहां के निवासियों द्वारा निर्मित भवनों का स्वरूप है। इन भवनों का निर्माण समतल चट्टान युक्त भूमी, नदी घाटियों, पर्वत शिखरों, पर्वत पृष्ठों, वनों के किनारे व मध्य, प्राकृतिक जल स्रोतो आदि विभिन्न स्थानों पर किया गया है। ये भवन समूह में गॉव को दर्शाते हैं।

कालान्तर में कुछ पारम्परिक भवन और बोलीगत स्थापत्य कला जो स्थानीय ज्ञान और तकनीक पर आधारित है, प्रकाश में आयी है। ऐसे भवनों का उस तीव्र भूकम्प में भी क्षतिग्रस्त न होना पाया गया है, जिसने पिछले 300.400वर्षों में उस क्षेत्र को रौंदा है।[1] गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश व हिमालय राज्य के अन्य भागों में आये विनाशकारी भूकम्प (1803ए1982ए1991ए 1996) जिसने कई सीमेंट–कंक्रीट के भवनों को पूर्णतः क्षतिग्रस्त कर दिया, किन्तु परम्परागत काष्ठ एवं पत्थर के भवन अप्रभावित रहे उत्तरकाशी जनपद के रैथल गॉव में प्राचीन पांच मंजिला भवन (पंचपुरा), कोटि का विशालकाय चबूतरे पर निर्मित छः मंजिला भवन (सुमेर), सुनाल्डी का प्राचीन बहुमंजिला भवन (सुमेर चौखट) गुना व बखरेटी के विशालकाय काष्ठ भवन (चौखट, सुमेर) तियां का बहुमंजिला मंदिर, भीतरी व दौणी की विशालकाय चौखटें व बहुमंजिले काष्ठ मन्दिर तथा खरसाली का प्राचीन दुर्ग समान सोमेश्वर मन्दिर जो कि लगभग 250साल पुराने हैं, इस के साथ–साथ अलकनन्दा घाटी क्षेत्र के काष्ठ व प्रस्तर निर्मित भवन भूकम्प के केन्द्र बिन्दु के नजदीक होते हुये भी अनेक झटकों को सहते हुये आज भी अपनी यथा स्थिति में खड़े हैं।

इस सन्दर्भ से हिमालय व गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश में स्थानीय भवन तकनीकि पर प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान समय में अत्याधिक महत्वपूर्ण और लाभकारी लगता है। इस अध्ययन में मध्य हिमालय की यमुना, टोंस एवं भागीरथी (गंगा) घाटियों के उच्च हिमालय से मध्य हिमालय क्षेत्र के कुछ प्रारूपिक काष्ठ भवन एवं ऊंचे बहुमंजिले काष्ठ भवनों की निर्माण पद्धति उपलब्ध निर्माण सामग्री एवं उनके आकार–प्रकार पर प्रकाश डाला है, जो कि इस भूकम्पीय क्षेत्र में स्थानीय शिल्पकारों द्वारा स्थानीय तकनीकि का प्रयोग करके बनाये गये हैं।

गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश या मध्य हिमालय की इस स्थापत्य कला के समरूप अफगानिस्तान[2], नेपाल[3], भूटान[4], काराकोरम[5], कश्मीर[6] एवं हिमाचल प्रदेश[7] से भी प्रकाश में आये हैं। अतः इस अध्याय के अन्तर्गत यहां की स्थापत्य कला का विवरण प्रस्तुत करना समचीन होगा।

इतिहास की दृष्टि से देखें तो वर्तमान में इतिहास निर्धारण में आवासीय भवनों का स्थान महत्वपूर्ण है, जो एक ही साथ सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक, आदि स्थितियों के निर्धारण में अहम भूमिका निभाते हैं। मध्य हिमालय में स्थित गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश अपनी आवासीय वास्तु शिल्प के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। यहां पर क्षेत्र की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल आवासीय वास्तु का अनुपम उदाहरण देखने को मिलता है, क्षेत्र में आवासीय वास्तु के रूप में काष्ठ एवं पाषाण खण्डों से निर्मित बहुमंजिली इमारतें एवं काष्ठ निर्मित भवन इस क्षेत्र की प्रसिद्धि हैं। हिमालय का यह सम्पूर्ण क्षेत्र पहाड़ी है, तथा चार घाटियों में विभक्त है (टोंस, यमुना और भागीरथी घाटी व अलकनंदा घाटी)। इन घाटी क्षेत्रों में कुछ समतल भू भाग गहरी टआकार की घाटियां मध्य से लेकर तीक्ष्ण ढलान सम्मिलित हैं, 2500 मीटर से ऊंचे स्थल बुग्याल (एक प्रकार की मखमली घास है), सरोवर तथा हिम शिखरों के लिये प्रसिद्ध हैं। हिमालय क्षेत्र में अधिवास के लिए 100 मीटर से 2500 मीटर तक ऊंचाई युक्त भू–भाग मानव अधिवास के लिये अनुकूलतम भू–भाग माना जाता है।[8] इस दृष्टि से गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश क्षेत्र में अधिकांश मानव अधिवास इसी धरातली ऊंचाई में मिलता है। जबकि अध्ययन क्षेत्र में 3000 मीटर से ऊंचाई वाले भाग अस्थायी निवास (ग्रीष्मकाल में प्रयोग किये जाने वाले भवन) के रूप में ग्रीष्मकाल में उपयोग किये जाते हैं।

गढ़वाल हिमालय की स्थानीय भवन स्थापत्य कला को, चौखट, कोठी, सुमेर, कुडा और पुरा (एकपुरा,द्विपुरा,पंचपुरा) आदि नामों से जाना जाता है। इस क्षेत्र में एक घाटी से दूसरी घाटियों के गॉवों की भवन

स्थापत्य कला थोड़ा बहुत बदलती प्रतीत होती है, जो कि भू–भाग, परिवर्तित जलवायु और वांछनीय संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करती है। उच्च यमुना घाटी एवं टोंस घाटी क्षेत्र में भवन स्थापत्य लगभग एक समान प्रतीत होता है। टोंस घाटी के ऊपरी क्षेत्रों में भवन को सुमेर सदृश्य 3 से 4 मंजिला बनाया जाता है। इनका आकार यमुना घाटी की अपेक्षा तीक्ष्ण ढलुवा है। वंगाड पट्टी व फतेहपर्वत क्षेत्र के अधिकतर भवनों पर यह तीक्ष्ण ढलुवा छत कई प्रकार की संरचनात्मक आकृतियों व काष्ठ अलंकरणों से अलंकृत की गयी है। भागीरथी घाटी में भवनों के निर्माण में यमुना घाटी एवं टोंस घाटियों की अपेक्षा काष्ठ का निम्न एवं मध्य क्षेत्रों में कम ही प्रयोग किया गया है। इस घाटी में 5 मंजिले भवनों के रूप में सिर्फ रैथल का पंचपुरा भवन है। जो निर्माण कला की दृष्टि से यमुना व टोंस घाटी क्षेत्र के सुमेर से कुछ भिन्नता लिये हुये है। भागीरथी घाटी में बनने वाले भवन पूर्ववर्ती भवन सामग्रियों की भांति काष्ठ एवं प्रस्तर से निर्मित हैं, लेकिन उनका अनुपातिक उपयोग एक भवन से दूसरे भवन एक गाँव से दूसरे गाँव में अलग–अलग है। निम्न घाटी क्षेत्रों में स्थित भवनों की अपेक्षा उच्च घाटी क्षेत्रों के भवन स्थापत्य पर काष्ठ का प्रयोग बढ़ता ही जाता है। इसी घाटी के उच्च क्षेत्र धराली के सम्मुख की पहाड़ी पर मुखवा गाँव हैं। यहां गंगा मैया (गंगोत्री) शीतकाल में रहती है। यह गाँव काष्ठकला का एक मुक्त आकाशीय प्राकृतिक संग्रहालय है। इस गाँव के ज्यादातर भवन 'तिपुरें' (तीन मंजिल) बनाये गये हैं।

हिमालय के इस क्षेत्र में पारस्परिक भवन काष्ठ एवं प्रस्तर खण्डों के साथ–साथ स्लेट की छतों से निर्मित हैं। ये घर वास्तव में एक आवासीय इकाई प्रस्तुत करते हैं, जिस पर भू आकृतिक प्रदेश, जलवायु, अर्थ व्यवस्था, संस्कृति और स्थानीय तकनीकि के प्रयोग का स्पष्ट प्रभाव है, जो कि अपने स्थानीय वातावरण का प्रतिफल भी है। आवासों का विभिन्न स्वरूप, विभिन्न भौतिक वातावरण के साथ–साथ भौतिक आर्थिक और सांस्कृतिक तथ्यों के अन्तः सम्बन्धों की अनुक्रियाओं को प्रस्तुत करता है, यह तथ्य और अनुक्रियायें भी समय गुजरने के साथ–साथ कुछ स्थानों पर परिवर्तित हो सकती हैं। वनों से देवदार की लकड़ी और स्थानीय पत्थर विशेषतया स्लेट जिन्हें स्थानीय भाषा में 'पठाल' कहा गया है, की आसान उपलब्धता ने पहाड़ के निवासियों की निर्माण तकनीकि को विकसित करने और आसानी से भवन योजना बनाने का पथ प्रशस्त किया है।

पारम्परिक भवनों के निर्माण के समय उनका आंगन और खिड़कियों को पूर्व, दक्षिण–पूर्व की ओर रखा जाता है, ताकि अधिकतम सूर्य का प्रकाश प्राप्त किया जा सके। किन्तु उच्च हिमालय क्षेत्र में उनका आकार अत्यन्त छोटा एवं सिर्फ हवा के आगमन के लिये प्रयुक्त किया जाता है। कतिपय भवनों की अन्तिम ऊपरी मंजिल की दिवारों पर खिड़कियों व रोशनदान का प्रावधान नहीं होता है। रोशनी के लिये छत पर छोटे से आयताकार छिद्र जिन्हें स्थानीय भाषा में 'दीरा' या 'तीरा' (रंवाई) या 'खटाई' (जौनसार बावर में) कहा गया है का प्रावधान है। इस प्रकार की परम्परागत प्रणाली मुख्यतः शीतलहरों के अत्यधिक चलने के कारण एवं इन क्षेत्रों में अत्यधिक बर्फ पड़ने के कारण अपनायी गई होगी।

प्रस्तर नींव युक्त भवनों के नींव के ऊपर काष्ठ फ्रेम पद्धति का प्रयोग किया गया है। जो कि भूकम्परोधी तकनीक के रूप में अध्ययन क्षेत्र में विकसित हुई प्रतीत होती है। भवन निर्माण के समय ही प्रथम काष्ठ फ्रेम पर प्रवेश द्वार का एक भारी भरकम विभिन्न शाखाओं युक्त फ्रेम रखा जाता है। इसके साथ–साथ जैसे–जैसे भवन का निर्माण ऊपर उठता चला जाता है। वैसे ही उपयोगिता की दृष्टि से अन्य प्रवेश द्वार, सामने की बड़ी खिड़कियां, छोटी खिड़कियां, नकली खिड़कियां, मौनपालक खिड़कियां, छजली, स्तम्भ, सीढ़ी, जंगले, अट्टालिका, अलमारियों आदि का निर्माण किया जाता है।

उच्च शिखरों पर स्थित अधिकांश पारम्परिक सामान्य आवासीय भवनों की ऊपर की दो मंजिलें सम्पूर्ण काष्ठ निर्मित होती हैं। ऐसे ही अनेक भवन मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्रकाश में आये हैं। जिसमें भवनों का ऊपरी भाग लकड़ी से निर्मित किया जाता था[9]ऋग्वेद में भी इस प्रकार के भवनों के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है[10] जबकि अध्ययन क्षेत्र में इस प्रकार की भवन स्थापत्य कला भागीरथी घाटी के उच्च स्थलों, मुखुवा, धराली, सालंग आदि गाँवों तथा यमुना घाटी में खरसाली, बीफ, निशनी, पिण्डकी, दूरविल, पुजेली, गैर, खान्सी, मोल्डा, भंकोली, बखरेटी, डंडाल, कन्ताड़ी, वीडाई, नैलाड़ी, हुडोली आदि के साथ साथ रामा सिराई, बडियार पट्टी के अधिकांश गाँव एवं जौनसार क्षेत्र के उच्च हिमालय क्षेत्र में देखी जा सकती है। टोंस घाटी में इस प्रकार के भवन अत्यधिक मात्राा में निर्मित हैं। रुपिन, सुपिन घाटियों, बंगाड़ पट्टी क्षेत्र में इस प्रकार के भवनों का प्राकृतिक संग्राहलय है।

प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने भवनों पर प्रयुक्त की गई सामग्रियों तथा भवनों की आकारिकी एवं साज–सज्जा के आधार पर इन भवनों को पांच मुख्य भागों में विभाजित किया है।

- कोठार– (संग्रह या अनाज भण्डारण भवन घरों के सम्मुख आंगन में निर्मित होते हैं)
- रिंगहाल (इस काष्ठ भवन में त्यौहारों एवं उत्सवों के समय मनोरंजन स्वरूप नृत्य गान होता हैं।)
- काष्ठ एवं प्रस्तर सीमित सामान्य भवन स्थापत्य (कूडा, दुपुरा, मकान)
- काष्ठ एवं प्रस्तर निर्मित बहुमंजिलें भवन स्थापत्य (कोठी, चौखट, तीनपुरा)
- काष्ठ–प्रस्तर निर्मित उच्च कोटी के उच्च शिखरीय बहुमंजिले भवन (सुमेर, पंचपुरा, चौखट)

इन पांचों वर्गों के भवन स्थापत्य की तकनीकी क्षेत्र में एक भूकम्परोधी संरचनाओं का निर्माण करती हैं। तृतिया वर्ग के भवन तीन मंजिल तक भी ऊंचे हैं जिन्हें स्थानीय लोग 'कुडा' दो मंजिल को 'द्विपुरा' एवं तीन मंजिल भवन को 'तीनपुरा' के साथ–साथ 'भूमड़ा' या मकान शब्द से जाना जाता है। ऋग्वेद में पत्थर एवं काष्ठ से निर्मित दो मंजिले भवन को दुपुरा (द्विपुरा) कहा गया है।[11] अध्ययन क्षेत्र में ये भवन मुख्यतः लोगों की आर्थिक स्थिति, पिछड़ी एवं निम्न जाति को दर्शाते हैं। ये भवन हैं। ये भवन अधिकांशतया उन लोगों के हैं, जो कि आर्थिक तौर पर कमजोर हैं तथा समाज मे जिनकी स्थिति अन्य लोगों की तुलना में निम्न हैं।

चतुर्थ वर्ग के भवन क्षेत्र में धनी लोगों के घरों के रूप में भी जाने जाते हैं, जो कि अधिकतर उच्च जातीय लोगों के हैं। प्रायः तीन या चार मंजिले निर्मित हैं। जिनमें भवनों की प्रथम व द्वितीय मंजिल काष्ठ एवं प्रस्तर निर्मित तथा तृतीय एवं चतुर्थ मंजिल पूर्णतया देवदार की लकड़ी की बनी होती है। संरचनात्मक दृष्टि से ये भवन रंवाई, टकनौर में बनने वाले 'सुमेर' व 'पंचपुरा' भवनों के समान ही है, लेकिन कलात्मक एवं आकृतिक की दृष्टि से इनमें कुछ विभिन्नतायें दृष्टव्य हैं।

पंचम वर्ग के भवन अति उच्च कोटी के हैं, जो कि उच्च या सम्पन्न लोगों से सम्बन्धित थे उन्हें सयाना स्थापत्य के रूप में भी जाना जाता है। मध्य हिमालय क्षेत्र के यमुना, टौंस एंव भागीरथी घाटी में विशिष्ट और अनोखी स्थापत्य के दर्शन होते हैं जो 5 या 6 मंजिलों में विभक्त हैं। काष्ठ एवं प्रस्तर निर्मित इन बहुमंजिले उच्च कोटी के भवनों की ऊंचाई लगभग 13 मीटर से 17 मीटर के मध्य आंकी गई है। स्थानीय भाषा में ये ऊंची संरचनाएं सुमेर, चौखट एवं पंचपुरा रूप में जानी जाती हैं, जो कि पहाड़ी क्षेत्र की वातावरणीय और भू आकृति की पृष्ठभूमि को इंगित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश सक्रिय भूकम्पीय क्षेत्र में पड़ता है। भूकम्प ने इस क्षेत्र को पिछले कई दशकों में कई बार प्रभावित किया है। विनाशकारी भूकम्प ने भवनों की प्रकृति पर ध्यान दिलाया जो इस भूकम्प में अत्यधिक प्रभावित हुए थे। इस सन्दर्भ में यह पाया गया था, कि गढ़वाल के पश्चिमी भाग उत्तरकाशी में सुमेर, चौखट एवं पंचपुरा के रूप में जानी जाने वाली कुछ अनोखी बहुमंजिले लकड़ी और पत्थर के सामंजस्य से निर्मित भवन उत्तरकाशी जिले के कोटी गाँव में बचे रह[12]इसके साथ–साथ रैथल का पंचपुरा भवन,

सुनाल्डी की चौखट, बखरेटी का सुमेर आदि इस विनाशकारी भूकम्प के साथ–साथ क्षेत्र में आने वाले भूकम्प के हल्के झटकों को झेलते हुये आज भी अड़िग जीवित खड़े हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश या पश्चिमी गढ़वाल हिमालय के ऊंचाई वाले भागों में स्थित इन ऊंचे भवनों का अध्ययन किया है।

कलात्मक दृष्टिकोण से ये बहुमंजिले भवन अध्ययन क्षेत्र के अन्य भवन संरचनाओं से थोड़ा भिन्नता लिये हुये हैं, लेकिन इनकी दीवारों की निर्माण तकनीकि एवं सामग्रियों में काफी हद तक समानता दृष्टिगोचर होती है। इन भवनों के निर्माण सामग्रियों के रूप में काष्ठ का अधिक व प्रस्तर खण्डों का अल्प प्रयोग किया गया है। इन बहुमंजिले भवन की मुख्य संरचनात्मक विशेषता नींव के ऊपर या नींव का बना प्लेटफार्म (चबुतरा) है, जो कि भूमी से 2.50 से 4 मीटर ऊपर उठाया गया है। कलात्मक दृष्टि से दूसरा विशिष्ट लक्षण इन बहुमंजिले भवनों के निर्माण में देवदार के एक ही तने से निर्मित लम्बे चौड़े लकड़ी के बिम्ब प्रयुक्त किये गये हैं, जो कि भूतल से अन्तिम ऊपरी मंजिल के छाजन की दीवार तक फ्रेम के रूप में एक दूसरे से जोड़े गये हैं, दीवारों के एक फ्रेम पर आठ बिम्बों (शहतीरों) का प्रयोग इस प्रकार से किया गया है कि प्रत्येक दीवार पर अन्दर व बाहर से दो बिम्ब तथा उसी के सामान्तर दीवार पर भी उसी सीध मे दो काष्ठ बिम्बों को रखकर अन्य दोनो दीवारों के काष्ठ बिम्बों का दो–दो कर इन बिम्बों के ऊपर रख कर एक फ्रेम का निर्माण किया गया है तथा एक दीवार के दो बिम्बों को एक डमरू नुमा लकडी के गुटके से जोड़ा गया हैं। इसी प्रकार से निर्मित कई काष्ठ बिम्बों के फ्रेमों की सहायता से सम्पूर्ण सुमेर की दीवारों को ऊपर उठाया गया था तथा इन फ्रेमों के साथ साथ या सम्पूर्ण फ्रेम बनने के पश्चात इनके मध्य तराशे गये प्रस्तर खण्डों की चिनाई फ्रेमों के मध्य मे अन्तराल के अनुसार की जाती थी, जबकि दीवार पर समानान्तर लगे बिम्बों के मध्य तराशे गये पत्थरों के टुकड़े गारे के रूप में भरे गये हैं।

सुमेर का छाजन मुख्यतः सामान्य पहाड़ी आवासों की तरह काष्ठ बिम्बों के ऊपर तख्तों तथा मिट्टी घास के मिश्रित मसाले के साथ प्रस्तर स्लेटों से किया गया है। भवन निर्माण के समय विभिन्न मंजिलों का विभाजन भी साथ ही साथ काष्ठ बिम्बों के ऊपर तख्तों को रख कर किया गया है।

अन्तिम ऊपरी पांचवी मंजिल के अग्रभाग एवं पश्च भाग में भी अट्टालिकाओं या बरामदे का निर्माण किया गया है, जो कि एक रेलिंग के साथ कतिपय जगह से छाजन तक बन्द है। इन बहुमंजिले भवनों के विशाल आकार के कारण इनमें बड़ी संख्या में लोग रह सकते थे। इन संरचनाओं ने पुराने समय में सम्पूर्ण समुदाय के लिये बहुउद्देशीय भूमिका निभायी होगी।

सुमेर, चौखट समान बहुमंजिली ईमारत, हिमाचल प्रदेश के कई क्षेत्रों में भी देखी गई है।[13]इस क्षेत्र में यह संरचना भण्डार गृह के रूप में भी जानी जाती है, जहां नाग देवताओं के मुखौटे रखे जाते हैं। इस प्रकार की महत्वपूर्ण संरचना हिमाचल प्रदेश में निरमंद शहर से भी वर्णित की गई है जो सतुलज वेसिन के दाहिनी ओर शेपर से लगभग 150 मीटर ऊँचाई पर स्थित ह।[14] कश्यप[15] के अनुसार निरमंद की ये संरचना परशुराम कोठी काम्पलेक्स नाम से जानी जाती है जो कि जीवित हडप्पन सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती है।

गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश क्षेत्र में उपस्थित बहुमंजिले काष्ठ एवं प्रस्तर निर्मित सम्पूर्ण घाटीयो के भवनो का अध्ययन तो सम्भव नही किन्तु इनकी आकारिकी,वनावट व विभिन्न भागो का एक संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र मे किया जा सकता हैं।

काष्ठ–प्रस्तर निर्मित उच्च कोटी के उच्च शिखरीय बहुमंजिले भवन (सुमेर, पंचपुरा, चौखट)

स्थापत्य कला एवं भव्यता की दृष्टि से ये भवन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अध्ययन क्षेत्र में यह अधिरचनाये आज भी सुरक्षित अवस्था में प्राप्त होते हैं। भवन का आधारीय स्वरूप आन्तरिक एवं बाह्य ओर से बिल्कुल जटिल है। निर्माण के कलात्मक स्वरूप के विस्तृत अध्ययन के पश्चात यह पाया गया है, कि सुमेर की दीवारों पर काष्ठ बिमों से निर्मित कई फ्रेम बनाये गये हैं, जो कि कोनों पर नीचे का फ्रेम ऊपर के फ्रेम से जुड़कर अन्य ऊपर रखे फ्रेमों से जुड़ते हुये दीवारों की निर्माण पद्धति को दर्शाते हैं। भवन के एक फ्रेम के निर्माण में लगभग 8 या अधिक काष्ठ बिमों (शहतीरों) का प्रयोग किया गया है, जो कि देवदार के एक ही तने से निर्मित हैं। पूर्व में भी उल्लेख किया गया है, कि एक दीवार पर दो शहतीर अन्दर व बाहर से काष्ठ जोड़ों के माध्यम से जुड़े होते हैं तथा इनके मध्य में दीवारों की मोटाई (चौड़ाई) के अनुरूप अन्तराल छोड़ा जाता है।

सुमेर की ऊँचाई जमीन से लगभग 17 से 18 मीटर के बीच रखी गई है इतनी ऊँचाई तक सुमेर को उठाने के क्रम मे तथा इन भवन को स्थायित्व देने के लिए8ग6ण65ग3मीटर माप का एक प्लेटफार्म (चबूतरा) बनाया जाता था, यह सम्पूर्ण प्लेटफार्म तराशे गये प्रस्तर खण्डों से निर्मित है,

चतुर्थ मंजिल की अट्टालिका की एक महत्वपूर्ण विशेषता पीछे की ओर टायलेट कम बाथरूम भी बनाया गया था, जो कि विशेषतः सर्दियों एवं रात्रि के समय प्रयोग में लाया जाता था। अन्तिम ऊपरी अट्टालिका (अटाई) जो पंचम मंजिल के अग्र एवं पश्च भाग में निर्मित की गई है के अग्रभाग

में काष्ठ निर्मित मंचीका भी बनाये गये हैं, जो कि मुख्यतः गर्मियों में सोने एवं बैठने हेतु प्रयुक्त किये जाते रहे होंगे। साथ ही इस मंचीका से सयाने लोग क्षेत्र पर सूक्ष्म नजर रखने तथा गॉव की गतिविधियो को देखने हेतु प्रयोग करते रहे होगे। बहुमंजिले भवन का छाजन मुख्यतः अन्य पर्वतीय भवन की तरह ढलुवा बना कर किया गया।

तलछन्द योजना में ये सम्पूर्ण भवन चार कक्षों में है, कतिपय जगह एक तो कई दो कक्षे में विभक्त हैं, अग्रभाग के कक्ष में कोने पर ऊपरी मंजिलों में प्रवेश करने हेतु अस्थाई काष्ठ सीढ़ी का प्रावधान है, जो कि भूतल एवं प्रथम मंजिल को एक दूसरे से जोड़ने का काम करती है। इसी प्रकार की योजना पार्श्व के कक्ष में भी कहीं दृष्टव्य होती हैं। क्योंकि प्रत्येक मंजिल दो भागों में विभाजित है जिसमें प्रवेश हेतु अलग–अलग प्रवेश द्वार है। विभिन्न मंजिलों की योजना निम्नवत् है।

भू तल

भूतल मुख्यतः ओबरा के रूप में जाना जाता है, जिसमें एक, दो व चार कक्ष हैं और इन्हीं कक्षों को प्रवेश द्वार की सीध में अग्र एवं पश्च कक्ष के रूप में दो अलग–अलग भागों मे बांटा गया है, प्रत्येक कक्ष की माप 3ण10ग250मीटर है। अग्रभाग के कक्ष में एक 1ण30गण0ण07मीटर माप के दरवाजे से प्रवेश किया जाता है, इसी कक्ष के कोने पर अस्थायी काष्ठ सीढ़ी ऊपरी मंजिलों में प्रवेश हेतु लगी है। भूतल में कोई भी वातायन नहीं दिया गया है। पश्च कक्षों के अन्दर की तरफ कोनों में 2.50 मीटर के गहरे चेम्बर (गोदाम) खोदे गये हैं, जो कि अनाज या अन्य उपयोगी वस्तुओं के भण्डारण हेतु प्रयुक्त होते थे, बाहरी तरफ से कक्ष जो ओवरा नाम से जाना जाता है मुख्यतः कृषि उपकरणों, ईंधन और चारा रखने के लिए बनाये गये हैं। भूतल जो कि भूमि से 2 से 4 मीटर की ऊँचाई पर स्थित हैं के अग्रभाग पर खुली अटाली का प्रावधान है। इसी में नीचे से एक अस्थाई सीढ़ी के माध्यम से चढ़ा जाता रहा होगा, जो कि सुरक्षात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी।

प्रथम मंजिल

प्रथम मंजिल मैजूद नाम से जानी जाती है, जो कि निचले कक्षों की भांति दो भागों में विभक्त है तथा इसके कक्षों की माप भी अन्य कक्षों के समान 3ण10ग2ण50मीटर है। प्रत्येक कक्ष में 28ग28सेमी के वातायन दिये गये हैं, इन वातायनों के लम्बे काष्ठ फ्रेम को भवन की दीवारों

पर प्रयुक्त दो काष्ठ बिमों के मध्य रखकर किया गया है। अग्रभाग में प्रवेश करने हेतु भूतल से काष्ठ सीढ़ियों प्रथम मंजिल में कोने के फर्श पर एक आयताकार छिद्र के माध्यम से खुलती हैं। अग्रभाग के कक्ष से पश्च कक्ष में एक दरवाजे के माध्यम से प्रवेश किया जाता है, इन कक्षों का प्रयोग मुख्यतः रसोईघर एवं सोने के लिये या अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं के संग्रह हेतु होता था।

द्वितीय मंजिल

द्वितीय मंजिल बौन्ड के रूप में जानी जाती है, जो कि मुख्यतः सोने के उद्देश्य से बनाया गया था, इस मंजिल के कक्षों मे भी अन्य कक्षों की भांति 3ण्10ग2ण्50मीटर माप के चार कक्षों में विभक्त किया गया है, तथा प्रत्येक कमरे में बहुत छोटे वातायन हैं।

तृतीय मंजिल

भवन की तृतीय मंजिल को भी अन्य निचली मंजिलों की भांति दो भागों में विभक्त किया गया है और प्रत्येक में दो–दो या एक कक्ष हैं तथा यह भी रहने के लिए प्रयोग होता था। मुख्यतः इसे भी बौन्ड के नाम से ही जाना जाता है। इन कक्षों की मुख्य विशेषता दीवारों में विभिन्न गृह सामग्री रखने के लिए लकड़ी की आलमारियां बनी हुयी हैं तथा हर कक्ष में छोटे–छोटे वातायन का प्रावधान है।

चतुर्थ मंजिल

चौथी मंजिल भी बौन्ड नाम से जानी जाती है, प्रत्येक कक्ष की माप 3ण्10ग2ण्50मीटर है, हर कक्ष में एक–एक वातायन का प्रावधान है। इसी मंजिल में भवन के चारों ओर वालकोनी (अटाई) निर्मित है, जिसमे प्रवेश हेतु अग्रभाग के कक्ष से एक दरवाजे का प्रावधान है, इसी प्रकार का प्रावधान पार्श्व के द्वितीय भाग में भी दृष्टिगोचर होता है। जैसा कि पहले भी बताया गया है कि इसी अट्टालिका के पश्च भाग की ओर शौचालय का प्रावधान है।

पंचम मंजिल

यह मंजिल भी बौन्ड के नाम से जानी जाती है जो कि मुख्यतः गर्मियों में रसोई घर तथा शयन कक्ष हेतु प्रयुक्त था। अन्य निचले कक्षों से भिन्न यह मंजिल6ण्70ग5ण्00मीटर आयताकार आकार के रूप में एक कक्ष का निर्माण करती हैं, जो कि बिमों द्वारा दो भागों में विभक्त किया गया है। इस कक्ष में दो प्रवेश द्वार आगे तथा दो पीछे दिये गये हैं। इसी कक्ष के अग्र एवं पश्च भाग में 1.55 मीटर चौड़ी बालकोनी (अटाली) का प्रावधान है। रसोई घर हेतु अलग से कमरा न होकर पिछली तरफ बालकोनी, तथा कमरे के बीच का भाग पकाने के उद्देश्य से बनाया गया है, जहां चूल्हे का निर्माण किया गया तथा पानी निकासी हेतु पत्थर की एक सिंक भी बनाई गई है जबकि अग्रभाग की बालकोनी बैठने एवं सोने हेतु प्रयोग में लाई जाती है।

स्थापत्य कला एवं भव्यता की दृष्टि से यह भूकम्परोधी संरचना इन क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में यह अधिरचनाये कुछ वीरान व जीर्ण–शीर्ण अवस्था में विद्यमान है, कतिपय पर मानव अधिवास है।

गंगा–यमुना नदी घाटी के स्रोत प्रदेश में निर्मित ये काष्ठ भवन अच्छे बुरे रूप में अपने पुरातन स्वरूप में आज भी खडे हैं। समय–समय पर इनका पुनरूद्धार होता रहा किन्तु आज भी मध्य हिमालय के पश्चिम में यमुना, टौंस व भागीरथी घाटी के उच्च पर्वत पृष्ठो पर बसे गॉव के स्वरूप प्राचीन गॉवों के दर्शन कराता हैं। इन भवनों की आंतिरिक संरचना में अनाज सहित कीमती वस्तुओं के संग्रहण हेतु डोबडीयो तथा बहार बने कोठारो का महत्वपूर्ण स्थान हैं, जो कि यहॉ के भवनो का मुख्य अंग हैं।

भूकम्परोधी पारस्परिक भवन काष्ठ एंव प्रस्तर खण्डों के साथ–साथ स्लेट की छतों से निर्मित ये घर वास्तव में एक आवासीय इकाई प्रस्तुत करते हैं, जिस पर भू आकृतिक प्रदेश, जलवायु, अर्थ व्यवस्था, संस्कृति और स्थानीय तकनीकी के प्रयोग का स्पष्ट प्रभाव होता हैं, जो कि अपने स्थानीय वातावरण का प्रतिफल भी हैं। आवासो का विभिन्न स्वरूप, विभिन्न भौतिक वातावरण के साथ–साथ भौतिक आर्थिक और सांस्कृतिक तथ्यों के अन्तः सम्बन्धो की अनुक्रियाओं को प्रस्तुत करता है,यह तथ्य और अनुक्रियायें भी समय के साथ–साथ कुछ स्थानो पर परिवर्तित हो सकती हैं। वनो से देवदार की लकड़ी और स्थानीय पत्थर विशेषतया स्लेट जिन्हें स्थानीय भाषा में पठाल कहा गया हैं की आसान उपलब्धता ने पहाड़ के निवासियों की निर्मण तकनीकी को विकसित करने और आसानी से भवन योजना बनाने का पथ प्रशस्त किया हैं। कतिपय गॉवों में बहुमंजिले उच्च कोटी के काष्ठ भवन भी प्रकाश में आये हैं ये काष्ठ भवन क्षेत्र के सामन्तो, सरदारो,सयाणो व कामीनो के थे जो कि क्षेत्र पर तगड़ी प्रशासनिक पकड़ बनाये रखने हेतु राजा द्वारा नियुक्त उच्च अधिकारीयों थे। इन्ही उच्च अधिकारियो ने समाज में ऊँचा दिखने के लिये सामान्य लोगो के भवनो से उत्कृष्ठ भवनो का निर्माण किया होगा, ये उत्कृष्ठ बहुमंजिले भवन क्षेत्र पर सूक्ष्म नजर रखने हेतु भी सक्षम थे। इसके साथ–साथ धाड़ा (लूटमार) के तीव्र होने के कारण ये बहुमंजिले काष्ठ भवन एक निगरानी टावर के रूप में भी सक्षम सिद्व हुये होगे।

सन्दर्भ

1. चैटवुड, पी0 : 1968 टैम्पल आर्किटेक्चर इन कुल्लू जनरल ऑफ रॉयल सोसाइटी आफ आर्ट अक्टूबर, पृष्ठ 933–4.,पंजाब गजेटियर 1917.,पोर्ट, एम0ली0 1985 'लैस कन्ट्रक्शन ट्रेडिशन लैस नेवार डी लॉ वैली डी काण्ठमाण्डू' इन लॉ होमी एट लॉ मैशन इन हिमालय इकोलॉजी टू नेपाल, पृ0 93–104.
2. ओलिवर, पी0ः 1997 इनसाइक्लापीडिया आफ बर्नीकुलर आकिर्टेक्चर आफ द वर्ल्ड (मकण टवसण 1.3) केम्ब्रिज यूनिर्वसिटी प्रेस (कैम्बरेज).
3. ओलिवर, पी0 : 1997. ऐशियन, ईर्स्टन एण्ड सैन्ट्रल इनसाइकलोपीडिया ऑफ वर्नीकुलर आर्किटेक्चर आफ द वर्ल्ड, वो 12 कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी लन्दन
4. मेसलैन्ड, जे0 : 1997 ऐंशियन ईर्स्टन एण्ड सेन्ट्रल इनसाइक्लोपीडिया आफ वर्नीकुलर आर्किटेक्चर आफ द वर्ल्ड, वो–12 केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस लन्दन.
5. हसन, ए0 : 1997 ऐशियन ईर्स्टन एण्ड सैन्ट्रल इनसाइक्लापीडिया आफ वर्नीकुलर आर्किटेक्चर आफ द वर्ल्ड वो–12 केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस लन्दन.
6. सांग्वी एस0सी0 : 1997 एशियन ईर्स्टन एण्ड सैन्ट्रल, इनसाइक्लोपीडिया आफ वर्नीकूलर आर्किटेक्चर आफ द वर्ल्ड वो–12 कल्चर एण्ड हवैोटटे स केम्ब्रिज्र यूनिवर्सिटी, प्रेस लन्दन.
7. राउथर लैण्ड, डी0पी0 : 1997 एशियन ईस्टर्न एण्ड सैन्ट्रल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ वर्नीकूलर आर्किटेक्चर आफ द वर्ल्ड वो–12 केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन.
8. बोस, एस0पी0 : 1997 दि ज्योग्राफी ऑफ हिमालया दिल्ली, पृष्ठ 71.
9. मार्शल, जे0 : 1932 मोहनजोदड़ो एण्ड इन्डससिवलाईजेशन इन– 3 वोल्यूम, लन्दन.

10. सिहं भगवान : 1987 हड़प्पा सभ्यता एवं वैंदिक साहित्य, राधाकृष्णन प्रेस दिल्ली।
11. ऋग्वेद, : 6/10/9, 8/40/12, 10/16/5,7.
12. सकलानी, पी0एम0, नौटियाल बी0 एवं नौटियाल, के0पी0 : 1999 सुमेर अर्थक्वेक रीससटैन्ट स्ट्र क्चर इन द यमुना वैली ऑफ द गढ़वाल हिमालय, साउथ एशियन स्टडीज–15 यू0के0, पृ055,65
13. हाण्डा, ओ0सी0 : 1984 न्यूमिसमेटिक सोर्स आफ द अर्ली हिस्ट्री आफ वेर्स्टन हिमालय, वी0आर0 पब्लिसिंग, कॉरपोरेशन दिल्ली, पृष्ठ 70–71.
14. कश्यप, पी0सी0 : 1984 सरवाईविंग हरप्पन सिविलाइजेशन, अभिनव पब्लिसिंग, दिल्ली पृ0 47–48.
15. वही, : पृ0 47–48.